E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2019; 1(1): 04-06
Received: 04-02-2019
Accepted: 06-03-2019

विवेक सिंह
अतिथि प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद वि0 वि0 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
विवेक सिंह
अतिथि प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद वि0 वि0 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियाँ

विवेक सिंह

प्रस्तावना

भारतीय विदेश नीति प्रतिक्रियावादी रही है। भारतीय विदेश नीति पूर्वानुमान पर आधारित रही है। USSR के विघटन का अंदाज नहीं लगा सका था। येत्तसिन से भारत सम्पर्क में नहीं था।

हमको पहल करनी चाहिए थी। इजराइल के विदेश मंत्री चुपके से भारत आये। हम सारे देशों का सिर्फ अनुकरण कर रहे हैं। विश्व के प्रमुख मुद्दें जिनमें– Security, Development & World Order (NI) एवं साधन Defence, Diplomacy & Communication भी थे। मुख्य चार तत्वों–Social, Political , Democracy, Securlaism, Socio Federatlism भारतीय मूल है। ये विकास की प्रक्रिया में देखी जानी चाहिए क्योंकि किसी का भी कही राज्य के औचित्य को प्रभावित रखेगा एवं सुरक्षा के लिए चुनौती बन जायेगा।

सुरक्षा एवं विकास (Secruity & Development) में घनिष्ठ सम्बन्ध है एक दूसरे से ज्यादा सम्बन्ध है। (1) Economic Growth through Agriculture & Industry (2) Modernisation (विश्व में नये–नये तरीकों को अपनाना चाहिए) (3) Democratisation (4) National Integration (5) Nation Building Process (6) धर्मनिरपेक्षता में यदि बाधा आती है तो राष्ट्र को खतरा है।

1950 में राज्य निर्माण (State Building) प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। जबकि राष्ट्र निर्माण (Nation Building) पूरा नहीं हुआ है। आज भी निम्नलिखित बाधायें उपस्थित हैं–

- Law & Order Problem.
- Proxy war.
- Low intensity conflict.
- Terrorist attacks.
- Insurgency.

ये वो मूल्य हैं जो भारतीय राज्य को खोखला बना रहे हैं। ये राजनीतिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक का परिणाम है।

राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियों के लिए प्रतिक्रिया बनानी पड़ती है। शीतयुद्ध के बाद सैनिक कम आर्थिक चुनौती ज्यादा पायी जाती है। जड़ की समस्या असमानता और आर्थिक अनियमितता ये दो Freedom from fear और आवश्यकता से सुरक्षा आयाम है। भारत में जनसंख्या ज्यादा है। जबकि आर्थिक वृद्धि कम हुई है जिसका परिणाम यह है कि आज देश में सामाजिक सम्बन्धों में गिरावट आयी है। इससे Social Coherence को नुकसान हुआ है। भारत में Unity in Diversity है इसीलिए भारत Multi ethnic, Multi religions, Developing Country है। भारत में संघीय व्यवस्था है जबकि राजनीति सम्प्रदाय एवं जाति पर आधारित है। यह अन्तर राजव्यवस्था को असंतुलित करने का महत्वपूर्ण कारण है। जातिवाद ने Politcal Game of selfishdness किया है। यह आधुनिकीकरण पर विपरीत प्रभाव डालता दिखता है। यह हमें मध्ययुगी व्यवस्था में ले जाता है। सउदी अरब में सड़क बनाने के लिए मजिस्द हटा दिया गया। सिंगापुर में जाति, धर्म के आधार पर अंतर नहीं पाया जाता है। हर आदमी का आर्थिक लक्ष्य होना चाहिए। कमजोर राष्ट्र हमेशा बलशाली राष्ट्रों के अन्दर निहित रहता है। लेकिन भारत संविधान में जाति नस्ल, धर्म लिंग के भेदभाव का विरोध करता है परन्तु व्यवहार में आज भी उससे दूर नहीं हो सके हैं।

राजनीतिक अस्थिरता निश्चित तौर से समाज की कानून व्यवस्था को ध्वस्त करती है। दबंग लोग चुनाव में जीतते हैं। अर्थात कानून के समक्ष समानता (Equality before law) नहीं है। यही अस्थिरता का कारण है। जिससे हिंसा बढ़ती है। सम्प्रदायवाद आज राजनीति का घिनौना साधन बन गया है। यह राजनीति एवं धर्म का शोषण करता है एवं राजनैतिक सहअस्तित्व को भंग करता है। भारत की तकनीकी क्षमता ने आंकाक्षाओं को जागृत किया है। Satelite Basel System ने जागृति आयी है। दुनिया में क्या चल रहा है, यह देखा जा सकता है। सांस्कृति–मनोवैज्ञानिक अस्थिरता तभी आयेगी, यदि सावधानी नहीं बरती जाती। यह स्पष्ट है कि राष्ट्र विकास में बेरोजगार समाज में

कुंठाओं को जन्म देती है एवं जागरूक नैतिकतावादी बेरोजगार युवक साम्प्रदायिक, राष्ट्र विरोधी शक्ति में फंस जाता है। मुस्लिम युवा आतंकवादियों के जाल में आ जाते हैं। और हिन्दू युवा अंधविश्वासों ने। क्योंकि सबसे ज्यादा बेरोजगार मुस्लिम है। सरकार को चाहिए कि नौकरी बनाये जिससे राष्ट्रीय विकास में सहयोग मिल सके। जम्मू एवं कश्मीर एवं पंजाब में आतंकवादियों में सामंजस्य है। कार सेवकों का उम्र भी 20–25 वर्ष थी। सरकार को इसके लिए नये कार्य क्षेत्र बढ़ाने चाहिए। आकांक्षाएं संतुष्टि में परिवर्तित नहीं होती हैं तो राज्य औचित्य खो देता है। सुरक्षा का खतरा देश को बाहर से नहीं वरन् आन्तरिक सुरक्षा का है। भारत में 35 वर्ष युद्ध नहीं हुआ परन्तु शान्ति नहीं रही है। संतुष्टि (Satisfaction) पूरी नहीं हो रही है अतः राज्य मजबूत नहीं बन सकता है। सड़कों की स्थिति ठीक नहीं है बिजली 60 प्रतिशत लोगों के पास नहीं है। बिजली के उत्पादन में 22 प्रतिशत नुकसान होता है। 40 प्रतिशत परिवारों के पास शुद्ध पानी नहीं है। 12 प्रतिशत परिवार पानी से बीमारियाँ झेल रहे हैं। 52 प्रतिशत जनसंख्या के पास शौचालय नहीं है। 35 प्रतिशत भारत झोपड़ पट्टी में रहता है। Infotech में भी भारत Super power नहीं बन सकता जब तक की ऊर्जा की आपूर्ति ठीक नहीं होती।

स्वतंत्रता के बाद 8 प्रतिशत हाई–वे बने हैं जबकि ट्रैफिक बढ़ा है। भारत सरकार ने अमरीकन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन से समस्याओं की ओर इशारा किया था। उन्होंने राष्ट्र निर्माण की बात की थी। पर्यावरण, बीमारी, स्वच्छ, पानी की तरफ इशारा किया था। The enemy withing the threat is important हमें राष्ट्र निर्माण में आगे बढ़ना चाहिए। सारी खराब प्रवृत्तियाँ खुद खत्म हो जायेगी। भारत सशक्त राष्ट्र बनेगा परन्तु भारतीय विदेश नीति आन्तरिक चुनौतियों के साथ समस्या के रूप में हमारे सामने है। मोटे तौर पर भारतीय विदेश नीति सन् 1927 से सन् 1964 तक नेहरू के हाथ में थी। नेहरू को विदेश नीति विरासत में मिली थी। नेहरू का निर्णय आज भी भारतीय विदेशी नीति में पाया जाता है। शास्त्री को विदेश नीति से ज्यादा सरोकार नहीं था। ये नेहरू जैसे कुलीन नहीं थे। शास्त्री का बाल्यकाल कठिनाई से गुजरा था। शास्त्री एक अच्छे संगठनकर्ता थे ये सविनय अवज्ञा (Civil Disobedience) में प्रथम बार जेल गये। नेहरू के कार्यकाल में ये रेलवे, गृहमंत्री बने थे। रेल मंत्री से त्याग पत्र इन्होंने नैतिकता के आधार पर दिया था। गृहमंत्री के रूप में उन्होंने प्रथम बार नेपाल यात्रा की। डॉ0 भगवान दास (प्रिसिंपल स्कूल के) से शास्त्री ने समन्वयवाद का रास्ता निकालना सीखा था। इसमें कभी–कभी हीनभावना भी दिखती थी। शास्त्री इनसे काशी विद्यापीठ में मिले थे। शास्त्री की प्रतिद्वंदिता मोरारजी देसाई से थी। शास्त्री की प्रतिद्वन्दिता मोरारजी देसााई से थी परन्तु देसाई ने पद से इंकार कर दिया। शास्त्री ने सर्वप्रथम स्वतंत्र विदेश मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह को बनाया था। स्वर्ण सिंह ने सर्वप्रथम पड़ोसी देशों से सम्बंध सुधारने का प्रयास किया। शास्त्री के सामने अप्रैल, 1965 में कच्छ के क्षेत्र में पाक ने आक्रमण कर दिया। शास्त्री ने पाक को पीछे हटने की चेतावनी दी। युद्ध विराम हुआ पाक शान्ति समझौता शास्त्री जी मृत्यु का कारण बना शास्त्री जी जातने थे कि भारत को मजबूती मिले इसके लिए परमाणु शक्ति हासिल करने की नीति को अपनाया होगा। शास्त्री ने अमरीका एवं रूस से परमाणु छाता माँगा। वे केवल शान्तिपूर्ण कार्य के लिए बताया था। सन् 1965 के युद्ध के बाद सोवियत संघ के मध्यस्थता से ताशकन्द समझौता हुआ। इस समय तक अमेरिका और सोवियत रूस विकास कार्यों की ओर केन्द्रित थे यह दितान्त का समय था क्योंकि अमरीका वियतनाम के साथ विवादों में व्यस्त था। अमरीका ने अप्रत्यक्ष रूप से ताशकन्द समझौते में भूमिका निभायी थी। समझौते में शास्त्री ने दो शर्त रखी थीः–

1. समझौते में कश्मीर का जिक्र नहीं होगा और
2. दोनों देश आगे लड़ाई नहीं करेंगे।

ताशकन्द में ही शास्त्री जी की मृत्यु हो गयी। शास्त्री ने पिल्लै समिति की गठन किया एवं विदेश सचिव पद की स्थापना की। सारे सचिवों की संयुक्त बैठक का भी प्रावधान किया ताकि विदेश नीति ठीक बन सके। उन्होंने संगठनात्मक कार्य किया। इन्होंने परमाणु नीति को नयी दिशा दी थी। सिर्फ डेढ़ वर्षों में इस दिशा में काफी प्रगति हुई।

सन् 1964 तक आदर्शवाद का प्रभाव ज्यादा रहा था। सन् 1964 के बाद शास्त्री जी ने आदर्शवाद को भारतीय विदेश नीति की पराजय का मुख्य कारण माना है। त्याग की भावना भी पराजय का कारण मानी गयी। शास्त्री जी ने यथार्थवादी राजनीति को ज्यादा महत्व दिया था। राजनीतिक यथार्थवाद को लाकर शास्त्री जी शान्ति स्थापित करना चाहते थे। चीन एवं पाक की चुनौतियों के कारण ही आदर्शवादिता की अवधारणा को त्याग किया था। एकतरफा शान्ति, विश्वास का वादा भारत ही निभाता रहा बाकी देश नहीं। जाने–अनजाने ऐसी घटनायें घटी एवं देशों ने जो नीतियों को अपनाया वह भारतीय नीति के बिल्कुल खिलाफ थी। भारतीय नेतृत्व को चुनौती चीन दे रहा था। चीन खुद को एशिया महाद्वीप का नेता मान रहा था। यद्यपि भारत भी चीन को हमेशा समर्थन देता रहा परन्तु चीन की विदेश नीति सदैव भारत के खिलाफ रही है। कौटिल्य अपने मण्डल सिद्धान्त में यही बात करते है कि दो शक्तिशाली राष्ट्र आपस में लड़ेंगे ताकि प्रतिनिधि वे ही बने। सरदार पटेल ने माना कि जनता की भावना के आधार पर ही देशी रियासतों के बारें में निर्णय लेना चाहिए। जबकि अन्य भारतीय राजनीतिज्ञ शासक के निर्णय को ही प्रमुख मानते थे क्योंकि जूनागढ़, जम्मू और कश्मीर, हैदराबाद एवं भोपाल के शासक पाक के पक्ष में ही फैसला दें क्योंकि वहाँ के शासक मुस्लिम थे। यदि वे पाक में विलय ना भी करें तो भी भारत से स्वतंत्र रखकर अपना सम्बन्ध बनायेंगे। परन्तु ज्यादातर राष्ट्र भारत में ही शामिल हुए। जबकि जूनागढ़ का भारत में विलय करने के लिए शक्ति का प्रयोग करना पड़ा। पाक ने जनान्दोलन का बहाना बताकर जम्मू और कश्मीर पर आक्रमण कर दिया एवं राजा हरी सिंह पर पाक में विलय या स्वतंत्र घोषित करने का प्रस्ताव जम्मू एवं कश्मीर को दिया। पाक ने जनजातियों को उकसाकर कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। हरी सिंह ने इस परिस्थिति में भारत में विलय की सन्धि का प्रस्ताव रखा और जम्मू एवं कश्मीर भारत का हिस्सा बन गया। भारतीय सेना ने कबाइलियों को खदेड़कर कश्मीर को सुरक्षित किया। परन्तु नहेरू की सुढ़ीकरण की नीति के कारण आधा कश्मीर जिस पर कबाइलियों ने कब्जा कर रखा था पाकिस्तान का हिस्सा बन गया। नेहरू ने अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का दायित्व मानते हुए शान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में यह मामला दे दिया। वे अध्याय 7 के तहत यू0एन0 में पहुँचे। यू0एन0 ने दोनों राष्ट्रों को युद्धरत् घोषित कर दिया। जबकि यह मामला अध्याय 6 में ही आता है। 13 अगस्त, 1948 में यह प्रस्ताव पास हुआ कि दोनों राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन न करे और शान्ति के लिए सीमा पर सैनिक देखभाल कर सके।

चूंकि भारत गुलामी से अभी–अभी निजात पाया था इसीलिए वह पश्चिमी प्रस्ताव को मानने के लिए विवश था। दूसरी बात, यह थी कि पाक को आक्रमणकारी माना भी परन्तु कश्मीर विवाद को हल करने के लिए जनमत संग्रह की बात कहीं गयी थी एवं दोनों देशों को अपनी सेना हटाने को कहा गया था। नहेरू कुछ शर्तों के साथ जनमत संग्रह के लिए तैयार थे परन्तु पाकिस्तान किसी भी शर्त को मानने के लिए तैयार नहीं था अतः जनमत संग्रह नहीं हो सका। शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में जम्मू एवं कश्मीर का शासन शुरू हुआ। शासन में कोई दिक्कत नहीं थी।

नेशनल कांफ्रेंस के प्रमुख शेख अब्दुल्ला कभी नहीं चाहते थे कि जम्मू एवं कश्मीर पाक में मिलें। सन् 1962 के भारत–चीन युद्ध में सोवियत संघ ने भारत का साथ नहीं दिया था। भारत जम्मू एवं कश्मीर मुद्दे पर सिर्फ Bi-lateral Treat, की बात करता है। पाकिस्तान एवं चीन की घटनाओं के आधार पर 1964 तक के भारतीय विदेश नीति के अनुभवों के आधार पर किसी राष्ट्रहित को बनाये रख पाना सिर्फ आदर्शवाद पर संभव नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी नेहरू का विश्वास उतना नहीं रह गया क्योंकि शान्ति सिर्फ एक लक्ष्य ही रह गया तथा चीनी एवं पाक आक्रमण में भारत ने खुद को असहाय महसूस किया। भारत ने यह सीखा कि एकता एवं अखण्डता के लिए आदर्शात्मक मूलों के साथ–साथ मार्गेन्थाऊ की राजनीतिक यथार्थवाद नहीं मिलाया जायेगा, तब तक राष्ट्र वास्तविक रूप से अखण्डता की रक्षा नहीं कर पायेगा।

राजा हरी सिंह द्वारा भारत में विलय के बाद तथा पश्चिमी राष्ट्रों की प्रतिक्रिया के उपरान्त भारत ने आदर्शात्मक मूल्यों को छोड़ना प्रारम्भ कर दिया था। देश की अखण्डता खण्डित हो चुकी थी। राष्ट्र के ढेर सारे भाग पर पाक का कब्जा हो गया था। जम्मू एवं कश्मीर का मामला सिर्फ संयुक्त राष्ट्र में जाने से रूका रह गया है। सन् 1964 के बाद जो भी विदेश नीति बनी उसमें सैद्धान्तिकता कम वरन् व्यावहारिकता पर ज्यादा जोर दिया गया था। लाल बहादुर शास्त्री के अनुभव के बारे में शक था। निर्णय की कमी मानी जाती थी। परन्तु शास्त्री जी तत्काालिक सूझबूझ से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के साथ घरेलू नीति को भी शास्त्री ने पूरा किया। चीन बहुलता के आधार पर कश्मीर को पाना चाहता था। यह एक बड़ी चुनौती थी। 'अकसाई चीन' का भाग पाक ने चीन को सौंप दिया एवं पश्चिमी मोड़ पर पाक खुद काबिज था एवं पूर्वी पाक भी उपलब्ध था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 बी0एल0 फाड़िया : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2017
2. पुष्पेश पंत : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014
3. यू0आर0घई : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
4. तेजस्कर पाण्डेय, सविता पाण्डेय : भारत में सामाजिक समस्याएँ, 2012
5. डॉ0 अश्विनी कुमार सिंह : कश्मीर समस्या, 2012
6. सुषमा गर्ग : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, 2014–15
7. डॉ0 दीनाथ शर्मा : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
8. रामसूरत पाण्डेय : राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014